डॉ. अभिनव दिव्यान्शु
सहायक प्रोफेसर,
इतिहास विभाग, सी.डी.ओ.ई.,
मंगलायतन विश्वविद्यालय, मथुरा,यू.पी.
abhinav.divyanshu@mangalayatan.edu.in

'प्राचीन भारतीय इतिहास में बुद्ध व उनकी मूर्तियों का एक अवलोकन– विश्व का फार्मूला या सूत्र–लाईट ऑफ एशिया– सब के पीछे बुद्ध है'

शोध संक्षेप–

प्रस्तुत शोध में बुद्ध के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। यह देखने का प्रयास किया गया है कि बुद्ध की मृत्यु के बाद, सदियो बाद ईसवी सदी के आस पास भारतीयो ने उनकी काफी मूर्तियॉ बनाई। उनमें से कुछ मूर्तियॉ काफी महत्वपूर्ण है क्योंकि ये भारतीय इतिहास की झॉकी प्रस्तुत करती है। हिन्दु धर्म के बहुत से देवी या देवता बुद्ध के जीवन चरित्र से ही प्रेरित होकर रचे गए है।

राम, कृष्ण, गरूण, पुष्पक विमान की धारणा जो उनके घर वापसी का प्रतीक है व मथुरा के गोपियो की विरह वर्णन कथा बुद्ध के जीवन से ही प्रेरित होकर ही रची गई है। परन्तु इसके सबूत क्या है? इस पर विचार किया गया है और भारतीय व विदेशी संदर्भ में देखने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध में उन मूर्तियो का संदर्भ दिया गया है जो इस संदर्भ में पुरातात्विक रूप से या यू कहे जहॉ से हिन्दु धर्म की शुरूआत होती है।

इस पर भी विचार किया गया है कि इस सब की शुरूआत कब से व कहॉ से होती है और हिन्दु धर्म के देवी देवता वास्तव में राजकुमार सिद्धार्थ ही है। ये रूपान्तरण कैसे हुआ और क्यो हुआ? ये ब्रह्मा, विष्ठणु व महेष्ठ कौन है? इनकी ऐतिहासिकता क्या है या ये देव किस ऐतिहासिक चरित्र से प्रेरित होकर रचे गए है।

अन्त में पहचानो कौन? असली कौन? नकली कौन? कौन किसकी प्ररणा है ? कौन किस से प्रेरित है? इनमें जातक कथाऔ की क्या भूमिका है? व उनकी एतिहासिकता पुरातत्व में प्रमाणिकता कहॉ तक जाती है। बौद्ध धर्म की क्या भूमिका है, 800 ईसा पूर्व के बुध की कार्बन डेटिग से वैदिक काल पर क्या प्रभाव पड़ा है, और कितने बुद्ध हुए है? आदि महत्वपूर्ण प्रश्नो पर चर्चा की गई है तथा इस संदर्भ में आधुनिक विचार व विचारको का क्या मत है इस पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है। इस संदर्भ में प्राचीन भारतीय व विदेशी कला व वास्तुकलाओं का एक छोटी सी प्रदर्शनी प्रस्तुत है।